SONAM BALA
(DEPT. OF GEOGRAPHY)
A.N.D. COLLEGE, SHAHPUR PATORY, SAMASTIPUR

2nd May 2020
SATURDAY

FOR B.A. - II (Hons)
PAPER - III, GEOGRAPHY OF INDIA & BIHAR

LECTURE - 30

UNIT - 3 PRODUCTION & DISTRIBUTION OF CEMENT IN INDIA

भारत में सीमेंट का उत्पादन एवं वितरण

सीमेंट उद्योग → सीमेंट उद्योग का आर्थिक दृष्टिकोण से लोहा के बाद दूसरा स्थान है। यह भवन निर्माण एवं अन्य विकास कार्यों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है तथा इसका उत्पादन एवं उपयोग देश के विकास एवं प्रगति का द्योतक है। भारत जैसे विकासशील देश में इस उद्योग का व्यवस्थित एवं संतुलित विकास में महत्व रखता है। यह उद्योग अनेक अन्य उद्योगों की कुंजी है।

उद्योगों का विकास → देश में आधुनिक ढंग से सीमेंट बनाने का सर्वप्रथम प्रयास 1904 में चेन्नई में किया गया था परंतु इसमें सफलता नहीं मिली। इस उद्योग का वास्तविक विकास सन् 1914 में शुरू हुआ जिस समय ① इंडियन सीमेंट कंपनी लिमिटेड, पोरबंदर (गुजरात) ② कटनी सीमेंट एवं इंडस्ट्रियल कंपनी, कटनी (मध्य प्रदेश) तथा ③ बूंदी पोर्टलैण्ड सीमेंट कंपनी बूंदी (राजस्थान) में स्थित तीनों कारखानों में सीमेंट का उत्पादन शुरू हुआ।

उस समय उनकी संयुक्त उत्पादन क्षमता 76,000 टन थी। प्रथम विश्व युद्ध के बाद 1919 से 1924 के बीच सीमेंट के सात नये कारखाने बने।

1) बानमेर
2) कैमूर (MP)
3) चारवासा
4) खलारी (झारखंड)
5) हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)
6) द्वारका (गुजरात)
7) डालमियानगर (झारखंड)

Scanned by CamScanner

सन् 1930 ई० तक इन कारखानों की उत्पादन क्षमता बढ़कर 7·22 लाख टन हो गयी 1926 में सीमेंट निर्माता संघ की स्थापना हुई, 1936 में 11 सीमेंट कंपनियों को मिलाकर ऐसोसिएटेड सीमेंट कंपनी (ACC) तथा 1937 में डालमिया सीमेंट समूह की स्थापना की गई। 1938 में कर्नाटक में भद्रावती में देश का सबसे पहला राजकीय कारखाना खोला गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय (1947) देश में सीमेंट के 23 कारखाने थे। देश विभाजन के बाद 5 कारखाने पाकिस्तान में चले गए तथा शेष 18 कारखाने भारत में रह गए, जिनकी कुल उत्पादन क्षमता लगभग 21 लाख टन थी, जब इन कारखानों में वास्तविक उत्पादन 15 लाख टन ही हुआ। इसके बाद सन् 1949 में 2·5 लाख टन क्षमता वाले तीन कारखाने स्थापित किए गए। इसी समय कुछ अन्य कारखानों का विस्तार भी किया गया। सन् 1949 में देश में उपस्थित सीमेंट के कारखानों की कुल क्षमता 28·5 लाख टन थी।

जिसमें ACC डालमिया संघ एवं अन्य कारखानों की उत्पादन क्षमता क्रमशः 18·45, 4·4 तथा 5·3 लाख टन थी। पंचवर्षीय योजना के दौरान देश की विकास परियोजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए सीमेंट की माँग को ध्यान में रखते हुए उसका उत्पादन बढ़ाने के लिए नए कारखाने स्थापित किए गए तथा पुराने कारखानों का विस्तार किया गया। वर्तमान में भारत विश्व का पाँचवा वृहतम सीमेंट उत्पादक देश है। भारत का सीमेंट उद्योग उत्पादन की दृष्टि से विश्व में दूसरा स्थान प्राप्त है। सन् 2012 में देश में 173 बड़े सीमेंट संयंत्र थे जिनकी स्थापित उत्पादन क्षमता 2340 लाख टन सीमेंट उत्पादन प्रतिवर्ष थी और दूसरी ओर देश में सन् 2012 में छोटे सीमेंट संयंत्रों की संख्या 350 रही, जिनकी 8 स्थापित

Scanned by CamScanner

उत्पादन क्षमता 3051 लाख सीमेंट उत्पादन की है। भारत में सीमेंट का प्रति व्यक्ति उपभोग 70 kg है, जो विश्व औसत का एक-तिहाई ही है, जबकि स्विट्जरलैंड में 689 kg, जापान में 591 kg, जर्मनी में 598 kg, इटली में 693 kg व ब्रिटेन में 221 kg है। इतने कम सीमेंट उपभोग का मुख्य कारण भारत में भवन निर्माण में विशेषकर ग्रामीण व मध्यम व गरीब परिवार के भवनों में सीमेंट के स्थान पर चूना व चिकनी मिट्टी को अधिक उपयोग में लाया जाता है।

उद्योगों का स्थानीयकरण (Localization of the Industry) → सीमेंट में प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल निर्माण प्रक्रिया में अपना वजन खो देते हैं। सामान्य रूप से 1 टन सीमेंट तैयार करने के लिए 1·6 टन चूना पत्थर 0·38 टन जिप्सम तथा 3·8 टन कोयले की आवश्यकता पड़ती है। चूँकि चूने का पत्थर और कोयला भारी होने के साथ-साथ मूल्य में सस्ते तथा अशुद्ध होते हैं अतः इन कच्चे पदार्थों को ढोने में परिवहन व्यय बहुत होता है। इसलिए सीमेंट के कारखाने अधिकांशतः कच्चे माल के क्षेत्रों के निकट ही स्थापित किए जाते हैं। भारत में इस दृष्टि से सबसे अधिक उपयुक्त क्षेत्र गुजरात तथा दक्षिण राजस्थान से लेकर विंध्याचल पर्वतों के साथ-साथ पूरब से छोटानागपुर के पठार तक फैला हुआ है। यहाँ उत्तम किस्म का चूने का पत्थर तथा कोयले की खानें पायी जाती हैं। विंध्याचल की पहाड़ियाँ उद्योग के लिए चूने का अक्षय स्रोत प्रदान करती हैं। सीमेंट बनाने के लिए कच्चे माल के रूप में अब इस्पात कारखाने की धमन भट्ठी का कचरा भी उपयोग में लाया जाने लगा है जो सुविधा-पूर्वक इस्पात के कारखानों से प्राप्त होता है। भारत में कोयले की खानें मुख्य रूप से झारखंड, प० बंगाल, ओडिशा तथा मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ में फैली हुई हैं।

Scanned by CamScanner

अतः अन्य प्रदेशों में स्थित सीमेंट कारखानों को कुछ (4)
असुविधा का सामना करना पड़ता है। इस असुविधा
से मुकाबला करने के लिए कोयला क्षेत्रों से दूर स्थित
कारखानों में उत्तम किस्म का कोयला प्रयोग किया जाता है।
इससे कम कोयले में अधिक ताप प्राप्त होता है।

Scanned by CamScanner